18

यक्ष-प्रश्न

(चक्रवर्ती राजगोपालाचारी)

आपने महाभारत का नाम ज़रूर सुना होगा। महाभारत में अनेक कथाएँ हैं। उन कथाओं में से एक है–यक्ष-युधिष्ठिर संवाद। यह संवाद महाभारत के 'वन-पर्व' में संकलित है। बगुले के वेश में उपस्थित यक्ष वास्तव में धर्मराज थे जो अपने पुत्र युधिष्ठिर की परीक्षा लेना चाहते थे। इस प्रसंग से यह संदेश मिलता है कि जीवन में कभी भी यदि परिस्थिति अनुकूल न हो तो भी हमें धैर्य के साथ उसका सामना करना चाहिए। आइए, इस पाठ के माध्यम से जीवन के वास्तविक सत्य को समझने का प्रयास करते हैं।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप

- मनुष्य-जीवन के अनेक दार्शनिक मूल्यों की व्याख्या कर सकेंगे;
- संवाद-कौशल को सीखकर जीवन में उनका प्रयोग कर सकेंगे;
- संवाद की शैली और विषयवस्तु का वर्णन कर सकेंगे;
- पाठ के भावपक्ष और भाषा पर टिप्पणी कर सकेंगे।

18.1 मूल पाठ

आइए इस संवाद को एक बार ध्यान से पढ़ते हैं–

पांडव द्रौपदी सहित वन में पर्णकुटी बनाकर रहने लगे। वे कुछ दिनों तक काम्यक वन में रहने के पश्चात् द्वैत वन में चले गये। वहाँ एक बार जब पाँचों भाई भ्रमण कर रहे थे तो उन्हें प्यास सताने लगी। युधिष्ठिर ने नकुल को आज्ञा दी– ''हे नकुल! तुम जल ढूँढ़कर ले आओ।''

नकुल जल की तलाश में एक जलाशय के पास चले आए, किंतु जैसे ही जल लेने के लिए उद्यत हुए, सरोवर किनारे वृक्ष पर बैठा एक बगुला बोला–''हे नकुल! यदि तुम मेरे प्रश्नों के उत्तर दिए बिना इस सरोवर का जल पियोगे तो तुम्हारी मृत्यु हो जाएगी।'' नकुल ने उस

टिप्पणी

बगुले की ओर तनिक भी ध्यान नहीं दिया और सरोवर से जल लेकर पी लिया। जल पीते ही वे भूमि पर गिर पड़े।

नकुल के आने में विलंब होता देखकर युधिष्ठिर ने क्रम से अन्य तीनों भाइयों–सहदेव, अर्जुन, तथा भीम को भेजा और उन सभी का भी नकुल जैसा ही हाल हुआ।

अन्ततः युधिष्ठिर स्वयं जलाशय के पास पहुँचे। उन्होंने देखा कि वहाँ पर उनके सभी भाई मृतावस्था में पड़े हुए हैं। वे अभी इस दृश्य को देखकर आश्चर्यचकित ही थे कि वृक्ष पर बैठे बगुले का स्वर उन्हें सुनाई दिया–''हे युधिष्ठिर! मैं यक्ष हूँ। मैंने तुम्हारे भाइयों से कहा था कि मेरे प्रश्नों का उत्तर देने के पश्चात ही जल लेना, किन्तु वे न माने और उनका यह परिणाम हुआ। अब तुम भी यदि मेरे प्रश्नों का उत्तर दिये बिना जल ग्रहण करने का प्रयत्न करोगे तो तुम्हारा भी यही हाल होगा।''

बगुला रूपी यक्ष की बात सुनकर युधिष्ठिर बोले–''हे यक्ष! मैं आपके अधिकार की वस्तु को कदापि नहीं लेना चाहता। आप अब अपना प्रश्न पूछिए।''

यक्ष ने प्रश्न पूछा–कौन हूँ मैं?

युधिष्ठिर उत्तर–तुम न यह शरीर हो, न इन्द्रियाँ, न मन, न बुद्धि। तुम शुद्ध चेतना हो, वह चेतना जो सर्वव्यापी है।

यक्ष-प्रश्न–जीवन का उद्देश्य क्या है?

युधिष्ठिर उत्तर–जीवन का उद्देश्य उसी चेतना को जानना है जो जन्म और मरण के बंधन से मुक्त है। उसे जानना ही मोक्ष है।

यक्ष-प्रश्न–जन्म का कारण क्या है?

युधिष्ठिर-उत्तर–अतृप्त वासनाएँ, कामनाएँ और कर्मफल ही जन्म का कारण हैं।

यक्ष-प्रश्न–जन्म और मरण के बंधन से मुक्त कौन है?

युधिष्ठिर-उत्तर–जिसने स्वयं को, उस आत्मा को जान लिया, वह जन्म और मरण के बंधन से मुक्त है।

यक्ष-प्रश्न–वासना और जन्म का संबंध क्या है?

युधिष्ठिर-उत्तर–जैसी वासनाएँ वैसा जन्म। यदि वासनाएँ पशु-जैसी तो पशु योनि में जन्म। यदि वासनाएँ मनुष्य - जैसी तो मनुष्य योनि में जन्म।

यक्ष-प्रश्न–संसार में दुख क्यों है?

युधिष्ठिर-उत्तर–संसार के दुख का कारण लालच, स्वार्थ और भय है।

यक्ष-प्रश्न–तो फिर ईश्वर ने दुख की रचना क्यों की?

युधिष्ठिर-उत्तर–ईश्वर ने संसार की रचना की और मनुष्य ने अपने विचार और कर्मों से दुख और सुख की रचना की।

यक्ष-प्रश्न–भाग्य क्या है?

युधिष्ठिर-उत्तर–हर क्रिया, हर कार्य का एक परिणाम है। परिणाम अच्छा भी हो सकता है, बुरा भी हो सकता है। यह परिणाम ही भाग्य है। आज का प्रयत्न कल का भाग्य है।

यक्ष-प्रश्न–सुख और शांति का रहस्य क्या है?

युधिष्ठिर-उत्तर–सत्य, सदाचार, प्रेम और क्षमा सुख का कारण हैं। असत्य, अनाचार, घृणा और क्रोध का त्याग शांति का मार्ग है।

यक्ष-प्रश्न–चित्त पर नियंत्रण कैसे संभव है?

युधिष्ठिर-उत्तर–इच्छाएँ, कामनाएँ, चित्त में उद्‌वेग उत्पन्न करती हैं। इच्छाओं पर विजय चित्त का विजय है।

यक्ष-प्रश्न–सच्चा प्रेम क्या है?

युधिष्ठिर-उत्तर–स्वयं को सभी में देखना सच्चा प्रेम है। स्वयं को सर्वव्याप्त देखना सच्चा प्रेम है। स्वयं को सभी के साथ एक देखना सच्चा प्रेम है।

यक्ष-प्रश्न–तो फिर मनुष्य सभी से प्रेम क्यों नहीं करता?

युधिष्ठिर-उत्तर–जो स्वयं को सभी में नहीं देख सकता वह सभी से प्रेम नहीं कर सकता।

यक्ष-प्रश्न–आसक्ति क्या है?

युधिष्ठिर-उत्तर–प्रेम में माँग, अपेक्षा, अधिकार आसक्ति है।

यज्ञ-प्रश्न–दिन-रात किस बात का विचार करना चाहिए?

युधिष्ठिर-उत्तर–सांसारिक सुखों की क्षण-भंगुरता का।

यक्ष-प्रश्न–संसार को कौन जीतता है?

युधिष्ठिर-उत्तर–जिसमें सत्य और श्रद्‌धा है?

यक्ष-प्रश्न–भय से मुक्ति कैसे संभव है?

युधिष्ठिर-उत्तर–वैराग्य से।

यक्ष-प्रश्न–मुक्त कौन है?

युधिष्ठिर-उत्तर–जो अज्ञान से परे है।

यक्ष-प्रश्न–अज्ञान क्या है?

युधिष्ठिर-उत्तर–आत्मज्ञान का अभाव अज्ञान है।

यक्ष-प्रश्न–दुखों से मुक्त कौन है?

टिप्पणी

युधिष्ठिर-उत्तर–जो कभी क्रोध नहीं करता।

यक्ष-प्रश्न–वह क्या है जो अस्तित्व में है और नहीं भी?

युधिष्ठिर-उत्तर–माया।

यक्ष-प्रश्न–माया क्या है?

युधिष्ठिर-उत्तर–नाम और रूपधारी नाशवान जगत।

यक्ष-प्रश्न–परम सत्य क्या है?

युधिष्ठिर-उत्तर–ब्रह्म।

यक्ष-प्रश्न–सूर्य किसकी आज्ञा से उदित होता है?

युधिष्ठिर-उत्तर–परमात्मा यानी ब्रह्म की आज्ञा से।

यक्ष-प्रश्न–मनुष्य का साथ कौन देता है?

युधिष्ठिर-उत्तर–धैर्य ही मनुष्य का साथी है।

यक्ष-प्रश्न–कौन सा शास्त्र है, जिसका अध्ययन करके मनुष्य बुद्धिमान बनता है।

युधिष्ठिर-उत्तर–कोई भी ऐसा शास्त्र नहीं है। महान लोगों की संगति से ही मनुष्य बुद्धिमान बनता है।

यक्ष-प्रश्न–भूमि से भारी चीज़ क्या है?

युधिष्ठिर-उत्तर–संतान को कोख में धरने वाली माँ, भूमि से भी भारी होती है।

यक्ष-प्रश्न–आकाश से भी ऊँचा कौन है?

युधिष्ठिर-उत्तर–पिता

यक्ष-प्रश्न–हवा से भी तेज़ चलने वाला कौन है?

युधिष्ठिर-उत्तर–मन

यक्ष-प्रश्न–घास से भी तुच्छ चीज़ क्या है?

युधिष्ठिर-उत्तर–चिंता

यक्ष-प्रश्न–विदेश जाने वाले का साथी कौन होता है?

युधिष्ठिर-उत्तर–विद्या

यक्ष-प्रश्न–बर्तनों में सबसे बड़ा कौन-सा है?

युधिष्ठिर-उत्तर–भूमि ही सबसे बड़ा बर्तन है जिसमें सब कुछ समा जाता है।

यक्ष-प्रश्न–संसार में सबसे बड़े आश्चर्य की बात क्या है?

युधिष्ठिर-उत्तर–हर रोज आँखों के सामने कितने ही प्राणियों की मृत्यु हो जाती है, यह देखते हुए भी इंसान अमरता के सपने देखता है। यही महान आश्चर्य है।

यक्ष-प्रश्न–कौन व्यक्ति आनंदित या सुखी है?

युधिष्ठिर-उत्तर–हे जलचर। जलाशय में निवास करने वाले यक्ष। जो व्यक्ति पाँचवें-छठे दिन ही सही, अपने घर में शाक-सब्जी पका कर खाता है, जिस पर किसी का ऋण नहीं है और जिसे परदेस में नहीं रहना पड़ता है, वही व्यक्ति सुखी है। (यदि युधिष्ठिर के शाब्दिक उत्तर को महत्व न देकर उसके भावार्थ पर ध्यान दें, तो इस कथन का तात्पर्य यही है जो सीमित संसाधनों के साथ अपने परिवार के बीच रहते हुए संतोष कर पाता हो, वही वास्तव में सुखी है।)

इस प्रकार यक्ष ने युधिष्ठिर से और भी अनेक प्रश्न किए और युधिष्ठिर ने उस सभी प्रश्नों के उचित उत्तर दिए।

इससे प्रसन्न होकर यक्ष बोले–हे युधिष्ठिर! तुम धर्म के सभी मर्मों के ज्ञाता हो। मैं तुम्हारे उत्तरों से संतुष्ट हूँ। अत: मैं तुम्हारे एक भाई को जीवनदान देता हूँ। बोलो तुम्हारे किस भाई को मैं जीवित करूँ?

चित्र 18.1 : युधिष्ठिर जवाब देते हुए यक्ष का

युधिष्ठिर ने कहा–आप नकुल को जीवित कर दीजिए।

इस पर यक्ष बोले–युधिष्ठिर। तुमने महाबली भीम या त्रिलोक विजयी अर्जुन का जीवनदान न माँग कर नकुल को ही जीवित करने के लिए क्यों कहा?

युधिष्ठिर ने यक्ष के इस प्रश्न का उत्तर इस प्रकार दिया–हे यक्ष! धर्मात्मा पांडु की दो रानियाँ थीं–कुन्ती और माद्री। मेरी, भीम और अर्जुन की माता कुन्ती हैं। तथा नकुल और सहदेव की माद्री। इसलिए जहाँ माता कुन्ती का एक पुत्र मैं जीवित हूँ, वहीं माता माद्री के भी एक पुत्र नकुल को ही जीवित रहना चाहिए। इसलिए मैंने नकुल का जीवनदान माँगा है।

युधिष्ठिर के वचन सुनकर यक्ष ने प्रसन्न होते हुए कहा–हे वत्स! मैं तुम्हारे विचारों से अत्यन्त प्रसन्न हूँ, इसलिए मैं तुम्हारे सभी भाइयों को जीवित करता हूँ। वास्तव में, मैं तुम्हारा पिता ध र्म हूँ और तुम्हारी परीक्षा लेने के लिए यहाँ आया था।

धर्म के इतना कहते ही सब पांडव ऐसे उठ खड़े हुए जैसे कि गहरी नींद से जागे हों। युधिष्ठिर ने अपने पिता धर्म के चरण-स्पर्श कर उनका आशीर्वाद लिया।

फिर धर्म ने कहा–''वत्स मैं तुमसे बहुत प्रसन्न हूँ, इसलिए तुम मुझसे अपनी इच्छानुसार वर माँग लो।'' युधिष्ठिर बोले–''हे तात! हमारा बारह वर्षों का वनवास पूर्ण हो रहा है और अब

हम एक वर्ष के अज्ञातवास में जाने वाले हैं। अत: आप यह वर दीजिए कि उस अज्ञातवास में कोई भी हमें न पहचान सके। साथ ही मुझे यह वर दीजिए कि मेरी गति सदा आप अर्थात धर्म में ही लगी रहे।'' धर्म युधिष्ठिर को उनके माँगे हुए दोनों वर देकर वहाँ से अंतर्ध्यान हो गए।

बोध प्रश्न 18.1

1. नकुल को वन में जल खोजने के लिए किसने भेजा था–

   (क) सहदेव (ख) भीम

   (ग) अर्जुन (घ) युधिष्ठिर

2. सरोवर के किनारे वृक्ष पर बैठा बगुला वास्तव में कौन था–

   (क) सरोवर का स्वामी (ख) गंधर्व

   (ग) यक्ष (घ) किन्नर

3. सहदेव, अर्जुन और भीम का नकुल जैसा हाल क्यों हुआ–

   (क) बगुले की बात पर ध्यान नहीं देने के कारण

   (ख) जल ले जाने की जल्दी होने के कारण

   (ग) सरोवर का जल पीने के कारण

   (घ) अधिक प्यास लगने के कारण

4. संसार में दुख का कारण क्या है?

   (क) लालच (ख) त्याग

   (ग) धन (घ) अभिलाषा

18.2 आइए समझें

आपने यह पाठ पढ़ा। पढ़ते समय आपके मन में अनेक प्रकार की जिज्ञासाएँ भी हो रही होंगी। जीवन में हम जीवन के गूढ़ और उपयोगी प्रश्नों पर विचार नहीं करते। कुछ वर्षों पूर्व हमारे पूर्वज बातचीत के माध्यम से जीवन की शिक्षा देते थे, जिनकी आपको भी ज़रूरत है। इसी उद्देश्य से आप इस पाठ को ध्यानपूर्वक पढ़िए।

कथा-सार : हम सभी जानते हैं कि महाभारत में दुर्योधन के साथ जुआ खेलते हुए युधिष्ठिर अपना सब कुछ हार गए थे। शर्त के अनुसार पांडवों को बारह वर्ष का वनवास और एक वर्ष का अज्ञातवास मिला था। इसी शर्त को पूरा करने के लिए पांडव द्रौपदी सहित वन में झोपड़ी

बनाकर रह रहे थे। कुछ दिन काम्यक वन में रहने के बाद द्वैत वन चले गए। एक दिन जब पाँचों भाई द्रौपदी सहित वन में घूम रहे थे, तब उन सभी को बहुत तेज प्यास लगी। युधिष्ठिर ने नकुल को पानी खोजकर लाने के लिए कहा। नकुल आज्ञाकारी भाई की तरह पानी की खोज में चल पड़ा।

नकुल जल की तलाश करते हुए एक जलाशय के पास पहुँचा और जैसे ही जल लेने के लिए झुका कि जलाशय के किनारे पेड़ पर बैठे बगुले रूपी यक्ष ने कहा–हे नकुल! जल लेने से पहले मेरे प्रश्नों का उत्तर दो। यदि मेरे प्रश्नों के उत्तर दिए बिना तुम इस सरोवर का जल पियोगे तो तुम्हारी मृत्यु हो जाएगी। लेकिन नकुल ने बगुले की बात पर बिलकुल ध्यान नहीं दिया और सरोवर से जल लेकर पीने लगा और जल पीते ही वह ज़मीन पर गिर पड़ा। नकुल के आने में देर होते देख युधिष्ठिर ने क्रम से अपने भाइयों को भेजना शुरू किया, लेकिन सभी ने वही ग़लती की जो नकुल ने की थी। एक ही तरह की गलती करने के कारण सभी भाइयों को एक ही प्रकार का दंड मिला और चारों भाई सरोवर के किनारे गिर पड़े।

हमें जीवन में परिस्थितियों का आकलन कर ही कदम आगे बढ़ाना चाहिए। दूसरी बात, अगर हमारे सामने कोई घटना घट चुकी है तो हमें कदम बढ़ाने से पहले उस घटना के कारणों पर विचार करना चाहिए।

अपने चारों भाइयों के वापस नहीं लौटने पर युधिष्ठिर चिंतित हो गए और स्वयं उस जलाशय के पास पहुँचे। वहाँ अपने चारों भाइयों को मृत देखकर हैरान थे, तभी उन्हें वृक्ष पर बैठे बगुले का स्वर सुनाई दिया–''हे युधिष्ठिर... यही हाल होगा।'' बगुले रूपी यक्ष की बात सुनकर युधिष्ठिर बिलकुल विचलित नहीं हुए और उन्हें वहाँ की परिस्थिति का ज्ञान हो गया। उन्होंने धैर्य के साथ यक्ष से कहा कि, हे आदरणीय यक्ष! यह सरोवर आपका है। इस सरोवर के जल पर आपका अधिकार है। आपके आदेश के बिना मैं जल ग्रहण नहीं कर सकता। आप प्रश्न पूछिए। इसके बाद यक्ष और युधिष्टिर के प्रश्नोत्तर हैं, जिन्हें आप पढ़ चुके हैं।

यक्ष और युधिष्ठिर का संवाद सिर्फ महाभारत की कहानी का अंश नहीं है, यह हमारे लिए जीवन का दर्शन है। हमारे दैनिक जीवन में इसका आज भी महत्व है। लेखक ने इस पाठ के माध्यम से मनुष्य के संघर्ष, ज्ञान, विवेक के साथ-साथ धैर्य, सहनशीलता और समय की प्रतीक्षा जैसे मूल्यों को स्थापित किया है।

इस पाठ को समझने के लिए इसे तीन अंशों में बाँटा गया है। आइए प्रश्नोत्तर शैली में प्रस्तुत किए गए विचारों और जीवन-मूल्यों को समझते हैं :

अंश–1

	प्रश्न		उत्तर
1.	कौन हूँ मैं?	•	शुद्ध चेतना
2.	जीवन का उद्देश्य क्या है?	•	चेतना को जानना
3.	जन्म का कारण क्या है?	•	अतृप्त वासनाएँ, कामनाएँ

4.	जन्म-मरण से मुक्त कौन है?	• जो स्वयं को जानता हो
5.	वासना और जन्म का संबंध क्या है?	• वासनाओं के अनुसार ही जन्म
6.	संसार में दुख क्यों है?	• लालच, स्वार्थ और भय के कारण
7.	ईश्वर ने दुख की रचना क्यों की?	• संसार की रचना की मनुष्य ने अपने विचारों और कर्मों से
8.	भाग्य क्या है?	• मनुष्य का कर्म ही भाग्य है।
9.	सुख और शांति का रहस्य क्या है?	• सत्य, सदाचार को अपनाना, असत्य, अनाचार का त्याग
10.	चित्त पर नियंत्रण कैसे संभव है?	• इच्छाओं पर विजय ही चित्त पर विजय

व्याख्या : आपने अभी तक महाभारत के इस अंश को पढ़ा। इस अंश में निहित भावों, विचारों एवं घटनाओं को समझा। मनुष्य के जीवन में आने वाली कठिनाइयों को देखा। आप यह जान चुके हैं कि कठिन परिस्थितियों में धैर्य रखना कितना आवश्यक है। धैर्य रखने से जीवन के गूढ़ प्रश्नों को हल किया जा सकता है। कठिन परिस्थितियों से बाहर निकला जा सकता है। हमारे जीवन में प्रतिदिन एक नया प्रश्न सामने आता है। इन प्रश्नों को वही व्यक्ति हल कर पाता है जिसके पास युधिष्ठिर के समान धैर्य, परिस्थितियों के आकलन करने की क्षमता तथा उत्तर देने का सामर्थ्य होता है। तो आइए, प्रश्नोत्तर शैली में छिपे जीवन के दर्शन को समझने का प्रयास करते हैं।

आपने बॉक्स में दिए गए संवाद को पढ़ा। यहाँ मूल पाठ में पूछे गए प्रश्नोत्तर का संक्षिप्त विवरण दिया गया है। आइए इस पर विचार करते हैं। मैं कौन हूँ–प्रश्न एक दार्शनिक प्रश्न है। इसका सीधा संबंध हमारे अस्तित्व से, हमारी पहचान से है। मनुष्य अपने अस्तित्व को परिवार, समाज आदि से जोड़कर देखता है। लेकिन यह व्यावहारिक नहीं है। युधिष्ठिर ने इस प्रश्न को समझा और उसी लय में अलग-सा उत्तर देते हुए कहा कि आम आदमी अपने को शरीर, इन्द्रिय, मन तथा बुद्धि से जोड़कर देखता है। युधिष्ठिर अलग हैं। उनके अनुसार अलग हैं। मैं एक चेतना है, जिसे सब कुछ पता होता है। जो सब कुछ जानता है। सब कुछ जानने वाला परमात्मा होता है। इस तरह मैं एक बड़ी चेतना (ब्रह्म) से जुड़ जाती है, जिसमें वातावरण को समझने तथा मूल्यांकन करने की शक्ति है। वह भूत, भविष्य और वर्तमान सभी को जानती है। इस महान आत्मा को जानना ही जीवन का उद्देश्य है। मनुष्य भ्रमवश सांसारिक माया-मोह में ग्रसित होकर वास्तविक उद्देश्य से भटका रहता है। शुद्ध चेतना रूपी परमात्मा को जानने के बाद वह जीवन की वास्तविकता को समझने लगता है। मूलत: ईश्वर को जानना ही जीवन का उद्देश्य है।

मनुष्य इस संसार में बार-बार जन्म क्यों लेता है– इसका उत्तर देते हुए युधिष्ठिर स्पष्ट करते हैं कि मनुष्य अपने प्रत्येक जन्म में संसार से लगाव रखता है, उसे मरते समय तक संसार की वस्तुओं से लगाव रहता है। जीवन में अनेक इच्छाओं के साथ जीता है और अनेक इच्छाओं

को अपने मन में लिए मृत्यु को प्राप्त होता है। जीवन में रहते हुए अपनी इच्छाओं को पूरा करने के लिए अच्छे-बुरे कर्म करता है। अतृप्त इच्छाओं, जीवन में किये गए कर्म तथा संसार के प्रति लगाव के कारण ही मनुष्य बार-बार जन्म लेता है। अब प्रश्न यह उठता है कि जन्म-मरण के बंधन से मुक्त कैसे रहा जा सकता है या इस संसार में मुक्त कौन है? युधिष्ठिर ने कहा कि जो अपने आपको जानता है। अपने आपको जानने का अर्थ अपनी आत्मा को जानना है। शरीर नाशवान है लेकिन आत्मा अजर-अमर है। आत्मा का कोई स्वरूप नहीं होता। वह परमात्मा का एक अंश मात्र है। शरीर नष्ट होने के बाद आत्मा एक नया शरीर धारण कर लेता है। इस आत्मा के स्वरूप को जानने वाला ही जन्म-मरण के बंधन से मुक्त हो सकता है। वासना का अर्थ लगाव से है। मनुष्य अपने जन्म के साथ विभिन्न भावनाओं और लगाव के साथ जीता है। जिन भावनाओं के साथ मनुष्य मरता है, पुनः उन्हीं भावनाओं के साथ जन्म लेता है। मनुष्य की भावनाएँ अगर पशु जैसी रहीं तो वह पशु बनकर ही जन्म लेगा। अगर भावनाएँ मनुष्य जैसी रहीं तो वह मनुष्य रूप में जन्म लेगा। अभिप्राय यह कि जिन मूल्यों के साथ आप अपना जीवन जीते हैं, उन्हीं मूल्यों के आधार पर आपका अगला जन्म होगा। इन्हीं वासनाओं में लिप्त रहने के कारण मनुष्य दुखी रहता है। संसार में दुख का कारण भी यही है। अधिकांश मनुष्य अपना जीवन लालच, स्वार्थ और भय के साथ जीते हैं।

हम सब अपने आस-पास प्रतिदिन अनेक घटनाओं को देखते हैं। उन घटनाओं के पीछे किसी-न-किसी का स्वार्थ छिपा होता है। घटनाओं को सुनकर या देखकर हमें दुख होता है, लेकिन उन घटनाओं के कारणों पर हम विचार नहीं करते। यही संसार की विडंबना है। जीवन में दुख हर क्षण आता है। हम सब विचार करते हैं कि भगवान ने आखिर दुख क्यों बनाया। यक्ष के प्रश्नों का उत्तर देते हुए युधिष्ठिर ने कहा कि दुख की रचना ईश्वर ने नहीं की। ईश्वर ने तो सिर्फ़ संसार बनाया है। इस संसार में रहने वाले लोगों ने अपने कर्म से, विचार से दुख और सुख की रचना की। मनुष्य जिस प्रकार का विचार रखता है, जैसा कर्म करता है, वैसा उसे दुख-सुख प्राप्त होता है। अतः हमें अपने विचार और कर्म पर नियंत्रण रखने की आवश्यकता है। हमारे चारों ओर उज्ज्वल और सकारात्मक विचार बिखरे हैं, ज़रूरत है– मुक्ति को व्यापक बनाने की।

आपने देखा और सुना होगा कि बहुत सारे लोग भाग्य के भरोसे रहते हैं। उनका मानना है कि चाहे कोई कितना भी परिश्रम करे, वही होगा जो उसके भाग्य में होगा, लेकिन ऐसा नहीं है। भाग्य जैसे प्रश्नों को सुलझाते हुए युधिष्ठिर ने कहा कि फल भाग्य पर नहीं कर्म पर आधारित होता है। मनुष्य जैसा कार्य करता है, उसे वैसा ही फल प्राप्त होता है। फल कभी आपके अनुकूल होता है तो कभी प्रतिकूल भी। यह फल ही भाग्य है। आज हम जिस क्षेत्र में प्रयास करते हैं, जितना परिश्रम करते हैं, आने वाले समय में परिश्रम और प्रयास के अनुकूल ही परिणाम प्राप्त होते हैं। यह परिणाम ही हमारा भाग्य है। संसार में हर व्यक्ति सुख और शांति से अपना जीवन जीना चाहता है। लेकिन वह उस रहस्य को नहीं जानता जो सुख और शांति के लिए आवश्यक है। सुख और शांति के लिए धन कमाना चाहता है। उसके विचार में जिसके पास धन है वही व्यक्ति सुखी है और जो सुखी है वही शांति से रह सकता है। लेकिन ऐसा नहीं है। भ्रमवश उस वास्तविक रहस्य को जानने का प्रयास नहीं करता। आज का मनुष्य सुख-सुविधा संपन्न है फिर भी अशांत और तनावग्रस्त है। इससे मुक्त होने के लिए हमें अपने चरित्र में उन सार्वभौमिक मूल्यों को स्थान देना पड़ेगा।

वास्तव में, सत्य, प्रेम, सदाचार और क्षमा जैसे मूल्य ही सुख के कारण हैं। असत्य, अनाचार घृणा और क्रोध का त्याग ही शांति का मार्ग है। सुख का स्रोत मानवीय मूल्यों में निहित है, जिसे आज की सभ्यता अनदेखा कर रही है। मन अनेक प्रकार के भोग-विलास में रमा रहता है। इच्छाओं पर नियंत्रण नहीं होता। सांसारिक वस्तुओं के प्रति लगाव बढ़ता जाता है, परिणामस्वरूप मन भटकता है। मन पर नियंत्रण करने के लिए हमें इच्छाओं, आकांक्षाओं तथा विलासिता के प्रति अनुराग पर नियंत्रण करना होगा। हमें यह तय करना होगा कि हमारी ज़रूरत क्या है? परिश्रम ज़रूरत के लिए होना चाहिए लालसाओं को पूरा करने के लिए नहीं। अत: अपनी इच्छा, आकांक्षा पर नियंत्रण कर लेने मात्र से मन पर अपने आप नियंत्रण संभव है।

अब आप निश्चित रूप से उन तमाम प्रश्नोत्तरों को समझने में सक्षम होंगे जिन पर ऊपर विचार किया गया है। आत्मा के स्वरूप, जन्म और मृत्यु के रहस्य, संसार में दुख के कारण, भाग्य आदि की प्रासंगिकता को समझ गए होंगे।

पाठगत प्रश्न 18.1

सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

1. जन्म का कारण है–

   (क) मोह (ख) इच्छा

   (ग) संसार से लगाव (घ) अतृप्त इच्छाएँ

2. मन को नियंत्रित किया जा सकता है–

   (क) इच्छाओं पर नियंत्रण से (ख) संसार को समझकर

   (ग) महान आत्मा को जानकर (घ) परमात्मा को जानकार

3. संसार में दुख का कारण है–

   (क) वासनाओं में लिप्त रहना (ख) धन की इच्छा रखना

   (ग) स्वयं को नहीं समझना (घ) मूल्यों को नहीं अपनाना

4. प्रेम क्या है–

   (क) भावना (ख) इच्छा

   (ग) मूल्य (घ) लगाव

क्रियाकलाप 18.1

- विद्यार्थी जीवन में आने वाली किन्हीं पाँच चुनौतियों को लिखकर उनके समाधान का उल्लेख कीजिए :

क्रम.सं.	चुनौतियाँ	समाधान
11.	सच्चा प्रेम क्या है?	• स्वयं को सभी में देखना
12.	मनुष्य सभी से प्रेम क्यों नहीं करता?	• स्वयं को सभी में नहीं देखने के कारण
13.	आसक्ति क्या है?	• प्रेम में माँग आसक्ति है।
14.	दिन-रात किस बात पर विचार करना चाहिए?	• सांसारिक सुखों की क्षण-भंगुरता का।
15.	संसार को कौन जीतता है?	• जिसमें सत्य और श्रद्धा है।
16.	भय से मुक्ति कैसे संभव है?	• वैराग्य से।
17.	मुक्त कौन है?	• जो अज्ञान से परे है।
18.	अज्ञान क्या है?	• आत्मज्ञान का अभाव अज्ञान है।
19.	दुखों से मुक्त कौन है?	• जो कभी क्रोध नहीं करता।
20.	वह क्या है जो अस्तित्व में है और नहीं भी?	• माया।
21.	माया क्या है?	• नाशवान जगत।
22.	परम सत्य क्या है?	• ब्रह्म।

अंश-2

आइए अब दूसरे अंश के प्रश्नों पर विचार करते हैं :

व्याख्या : उपर्युक्त बॉक्स में इस पाठ के दूसरे अंश के प्रश्नोत्तर को प्रस्तुत किया गया है। इस अंश में भी भारतीय दर्शन के तमाम उन प्रश्नों को सामने रखा गया है जिसका हमारे जीवन से सीधा सरोकार है। प्रेम, आसक्ति, भय, मुक्ति, अज्ञान, माया तथा दुख जैसे प्रश्न हम सभी के जीवन से जुड़े हुए हैं। हमें नित्य-प्रति इसका सामना करना होता है। आइए, इन प्रश्नोत्तरों को समझने का प्रयास करते हैं।

आइए, सबसे पहले सच्चे प्रेम के बारे में समझते हैं। प्रेम एक सार्वभौमिक मूल्य है। संपूर्ण संसार में प्रेम विविध रूपों में व्याप्त है। हम सभी प्रेम के वशीभूत हैं। प्रेम किसी-न-किसी रूप में हम सभी को एक-दूसरे से जोड़े हुए है। प्रेम का क्षेत्र विस्तृत है। लेकिन वर्तमान समय में प्रेम का दायरा संकुचित हो चुका है। हम सभी संकीर्ण सोच के अधीन हो चुके हैं। इस दौर में यह प्रश्न और अधिक प्रासंगिक हो जाता है कि सच्चा प्रेम क्या है? संपूर्ण संसार को अपना मानना ही सच्चा प्रेम है। हम जितना प्रेम अपने-आप से करते हैं उतना ही संसार की

टिप्पणी

सभी वस्तुओं से प्रेम करना सच्चा प्रेम है। लेकिन मनुष्य संसार के सभी प्राणियों से प्रेम नहीं कर पाता है। उसका दायरा सीमित हो जाता है। वह प्रेम भी स्वार्थ के कारण करता है। स्वार्थ का क्षेत्र संकीर्ण है, जबकि प्रेम का क्षेत्र उदात्त और विस्तृत होना है। जब प्रेम स्वार्थ के दायरे में सिमट जाता है तो सभी से प्रेम नहीं किया जा सकता। मनुष्य सभी में अपने आप को नहीं देख पाता। सांसारिक आकर्षणों से मुक्त नहीं हो पाता। जहाँ उसका स्वार्थ पूरा होता है और जब तक होता है, वह तभी तक वह प्रेम करता है, इसलिए वह सभी से प्रेम नहीं करता।

दूसरा महत्वपूर्ण पक्ष आसक्ति का है। स्वार्थ की जड़ में आसक्ति है। किसी से कुछ पाने की इच्छा रखना ही आसक्ति है। प्रेम हमें स्वार्थ से मुक्त करता है। आसक्ति हमें स्वार्थी बनाती है। आज समाज में स्वार्थ के कारण ही गिरावट आयी है। चारों ओर स्वार्थ का बोलबाला है। आसक्ति एक नशा है। बुद्धिमान व्यक्ति ही आसक्ति से मुक्त होकर प्रेम की वास्तविकता को समझ सकता है। समाज के निर्माण में बुद्धिमान व्यक्ति की भूमिका की आवश्यकता है। संसार के प्रति आसक्ति का सबसे बड़ा कारण दिन-रात विभिन्न सांसारिक कार्यों तथा उसमें सफलता प्राप्त करने के बारे में सोचते रहना है।

यह भी सवाल उठता है कि जीवन में विचार करने योग्य क्या है? मनुष्य संसार की क्षण-भंगुरता पर विचार नहीं करता। दिन-रात उस व्यापार पर विचार करता रहता है जो स्थायी नहीं है। सांसारिक सुख आज है, कल नहीं रहेगा। जिसे हम सभी सुख मानते हैं उसके नष्ट होने की संभावना पर विचार करना चाहिए। इस संसार पर वही व्यक्ति विजय प्राप्त करता है जो सत्य को श्रद्धापूर्वक अपनाता है। अर्थात् सत्य पर चलने वाला व्यक्ति ही संसार पर विजय प्राप्त करता है।

हम सभी जीवन में भय से मुक्त होना चाहते हैं। हम इस बात से भयभीत रहते हैं कि कहीं कुछ छूट न जाए। भविष्य की चिंता में भयभीत रहना हमारे स्वभाव का हिस्सा बन जाता है। इस चिंता से मुक्त रहना ही भय से मुक्त रहना है। वस्तु के प्रति राग न रखना ही वैराग्य है। वैरागी ही ज्ञानी है। जो नाशवान सुखों से अपने को बाँधकर रखता है, वही अज्ञानी है। जो इस अज्ञानता से परे है वही मुक्त है। जो मुक्त नहीं हो पाता वह लगातार अज्ञानता में घिरता जाता है। आत्मज्ञान का अभाव ही अज्ञान होता है। आत्मज्ञान ही वास्तविक ज्ञान कहलाता है।

अगला सवाल दु:खों से मुक्ति, माया के स्वरूप और परम सत्य से जुड़ा है। संसार में अनेक प्रकार के दु:ख हैं। प्रत्येक मनुष्य दुख से मुक्त रहने की कामना करता है, लेकिन दुख के कारणों पर विचार नहीं करता। युधिष्ठिर ने कहा कि हे यक्ष, इस संसार में दुख का कारण ही क्रोध है। जो क्रोध नहीं करता वह सुखी है। क्रोध का संबंध कामनाओं के साथ है। मनुष्य विविध प्रकार की कामनाओं से घिरा हुआ है। जब उसकी कामनाएँ पूरी नहीं होतीं तो वह क्रोधित हो जाता है। क्रोध करने के कारण वह दुखी रहता है। आत्मज्ञान के अभाव में हम सांसारिक सुखों में वास्तविक सुख की तलाश करते हैं। मनुष्य माया के वशीभूत है। माया के

कारण ही मनुष्य वस्तुओं में सांसारिक सुख खोजता है। यह नाशवान संसार ही माया है। यह अस्तित्व में है भी और नहीं भी है। जो संसार हमें दिखाई देता है वह अस्थायी है। वह एक दिन अवश्य नष्ट होगा, लेकिन उससे हमारा लगाव बढ़ता जाता है। इस संसार को बनाने में सहायक सभी वस्तुएँ माया है।

जब दिखाई देने वाली सभी वस्तुएँ माया है तो फिर सत्य क्या है? सत्य एकमात्र ईश्वर को माना गया है। जो अजन्मा है, अमर है। ईश्वर ही ब्रह्म है। बह्म ही परमात्मा है। आत्मा का सीधा संबंध जिसके साथ है। संपूर्ण संसार जिसकी आज्ञा से संचालित है। प्रकृति का निर्माण करने वाला ही परम सत्य है। सूर्य चंद्र और पृथ्वी की गति जिससे निर्धारित है। संसार में मौजूद समस्त चर-अचर पदार्थ जिसकी कृपा से गतिवान है वह शक्ति ही सत्य है।

पाठगत प्रश्न 18.2

सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

1. हम सभी को जोड़ने का काम करता है–

   (क) प्रेम (ख) धन

   (ग) रिश्ता (घ) विचार

2. समाज के निर्माण में किसकी भूमिका महत्वपूर्ण है–

   (क) राजनेता (ख) बुद्धिमान

   (ग) बलवान (घ) धनवान

3. संसार पर विजय प्राप्त करने वाला व्यक्ति है–

   (क) कर्मवादी (ख) वैरागी

   (ग) सत्यवादी (घ) आत्मज्ञानी

क्रियाकलाप 18.2

- मानव जीवन को उन्नत बनाने में अनेक गुणों का होना अनिवार्य है; जैसे–प्रेम, वैराग्य, सद्ज्ञान आदि। ऐसे ही किन्हीं पाँच गुणों का उल्लेख कीजिए।

अंश-3

आइए, अब हम अंश-3 को विस्तार से समझते हैं :

टिप्पणी

23. सूर्य किसकी आज्ञा से उदय होता है?	• परमात्मा की आज्ञा से
24. मनुष्य का साथ कौन देता है?	• धैर्य
25. किस शास्त्र का अध्ययन कर मनुष्य बुद्धिमान बनता है।	• महान लोगों की संगति से ही मनुष्य बुद्धिमान बनता है
26. भूमि से भारी चीज़ क्या है?	• माँ भूमि से भारी है
27. आकाश से भी ऊँचा कौन?	• पिता
28. हवा से भी तेज़ चलने वाला कौन?	• मन
29. घास से भी तुच्छ क्या है?	• चिंता
30. विदेश जाने वाले का साथी कौन होता है?	• विद्या
31. बर्तनों में सबसे बड़ा कौन सा है?	• भूमि, जिसमें सब कुछ समा सकता है।
32. संसार में सबसे बड़ा आश्चर्य क्या है?	• रोज लोगों को मरते देखकर भी खुद अमर रहना चाहता है।
33. कौन व्यक्ति सुखी है?	• जो व्यक्ति अपने घर में रहकर बिना ऋण लिए शाक-सब्जी खाकर संतोष से रहता है।

व्याख्या : अभी तक आपने बहुत सारे प्रश्नोत्तरों को पढ़ा और समझा। इन प्रश्नों से हम सभी रोज़ गुजरते हैं। ये हमारे जीवन के लिए बहुत ही उपयोगी हैं। हम सभी अपने संसार में उलझे रहते हैं। अपने जीवन को लेकर रात-दिन चिंतित रहते हैं। अपने व्यवहार से एक-दूसरे को दुखी करते हैं और स्वयं भी दुखी होते हैं। छोटी-छोटी बातों को लेकर आपसी द्वे हो जाता है। सांसारिक वस्तुओं के प्रति अनुराग बढ़ता जाता है। इन्हें प्राप्त करने के लिए नाना प्रकार के उपक्रम करते हैं। लेकिन सुख-शांति नहीं मिलती। इस संपूर्ण अंश में जीवन के दार्शनिक प्रश्नों को प्रस्तुत किया गया है।

तो आइए पाठ के इस अंतिम अंश के प्रश्नोत्तरों पर विचार करते हैं। हम सभी जानते हैं कि सृष्टि का संचालक परमात्मा है। ईश्वर कृपा के बिना कुछ भी संभव नहीं है। लेकिन इसका भान उसी व्यक्ति को होता है जो ईश्वर की सत्ता में विश्वास रखता है। यक्ष ने प्रश्न पूछा कि सूर्य किसकी आज्ञा से उदित होता है? संसार की प्रत्येक वस्तु में ईश्वर मौजूद है। सूर्य भी परमात्मा की आज्ञा से उदित होता है। गीता में भगवान कृष्ण जब अपना विराट रूप दिखाते हैं तब भी वे यही कहते हैं कि सूर्य, चन्द्र, नक्षत्र आदि सब मुझसे ही जन्म लेते हैं और में भीतर ही समाकर नष्ट होते हैं। संसार की रचना करने वाला ब्रह्म ही परमात्मा है। संसार के सभी चर-अचर पदार्थ परमात्मा की कृपा से गतिमान हैं।

एक महत्वपूर्ण सवाल हम सभी से जुड़ा है कि जीवन को बेहतर बनाने में सबसे अधिक सहायक कौन है? वास्तव में, यह संसार एक मंच है। इस मंच पर सभी जीव अपनी-अपनी भूमिका निभाने में व्यस्त हैं। मनुष्य ईश्वर की सबसे अनुपम कृति है। वह अनुपम इसलिए है वह विवेकशील है। माया के प्रभाव में आने के बाद मनुष्य अपना विवेक खो देता है। इस तरह की परिस्थितियों में मनुष्य का साथ उसका धैर्य देता है। जीवन में अनेक प्रकार की कठिनाइयाँ आती हैं। इन कठिनाइयों में जो धैर्यवान होता है वह सहनशील एवं स्थिर रहता है। समय को समझते हुए अच्छे समय की प्रतीक्षा करने वाला मनुष्य ही जीवन में सफल होता है। कठिन परिस्थितियों में चारों ओर से निराश होने के बावजूद मनुष्य अपने आंतरिक शक्ति के सहारे ही जीवन का युद्ध जीत सकता है। धैर्य का महत्व एक बुद्धिमान मनुष्य ही समझ सकता है।

हमें यह भी समझने की ज़रूरत है कि हम बुद्धिमान कब कहलाएँगे? लोक में पुस्तकीय ज्ञान रखने वाले मनुष्य को बुद्धिमान समझा जाता है। पुस्तकीय ज्ञान को ही परम सत्य माना जाता है। लेकिन यह सत्य है कि किसी भी प्रकार की पुस्तक या शास्त्र पढ़ने से बुद्धिमान नहीं बना जा सकता। आज जब हम लोग अपने चारों ओर देखते हैं तो बड़े-बड़े आचार्य, विद्वान, पदाधिकारी आदि निजी स्वार्थ से बँधे हैं। समाज, राष्ट्र तथा लोक से अधिक उन्हें अपनी चिंता है। इसलिए हमें उस व्यक्ति के संपर्क में रहना चाहिए जो महापुरुष है। जो व्यक्ति समाज और राष्ट्र के निर्माण में अपने जीवन को समर्पित करता है, हमें उसका अनुसरण करना चाहिए।

आधुनिक समाज में माँ-बाप के प्रति स्नेह व आदर की कमी भी दिखाई देती है। इस सवाल को भी यहाँ प्रस्तुत किया गया है। भारतीय दर्शन में माँ का स्थान सबसे ऊँचा है। माँ को भूमि से भी भारी बताया गया है। माँ अपने गर्भ में संतान को धारण करती है और प्रसन्न रहती है। यहाँ भारी से तात्पर्य उसकी महानता है। जिसमें जितना अधिक धैर्य होता है वह उतना महान होता है। प्रसव-पीड़ा की वेदना सहने वाली माँ से महान और कोई नहीं हो सकता। दूसरी ओर पिता को आकाश से भी ऊँचा कहा गया है। आकाश संपूर्ण धरती को अपने भीतर समेटकर रखने के बाद भी अहंकार नहीं करता। पिता समस्त आघातों को सहते हुए अपने परिवार पर छाया बनकर खड़ा रहता है। अपने परिवार पर किसी प्रकार से आँच नहीं आने देता। जिस प्रकार आकाश के विस्तार को नापा नहीं जा सकता, वैसे ही पिता के हृदय का विस्तार आकाश सदृश होता है।

वर्तमान समय में लोगों में अत्यधिक चिंता की प्रवृत्ति बढ़ गई है। इस प्रश्न की व्याख्या नए

टिप्पणी

रूप में की गई है। इस संसार में मन की गति हवा से भी तेज होती है। विचार के साथ मन विचरण करता है। मन वहाँ पलक झपकने से पहले पहुँच जता है, जहाँ के बारे में हमारे मन में विचार उत्पन्न होता है। हम लोग उन सभी जगहों पर बैठे-बैठे पहुँच जाते हैं जहाँ कल्पना करते हैं। चिंता को घास से भी तुच्छ माना गया है। चिंता करने से कुछ भी प्राप्त नहीं होता। अहित को छोड़कर हित नहीं होता। घास पशुओं के भोजन के काम आता है। घास खाने से पशुओं का पेट भरता है, लेकिन चिंता करने से मनुष्य कई प्रकार की समस्याओं से ग्रसित हो जाता है। चिंता घास से भी तुच्छ है। घास सूखने के बाद जलता है। चिंता करने वाला व्यक्ति खुद-ब-खुद जलता रहता है।

आप जानते हैं कि सर्वत्र विद्या की भूमिका होती है। संसार में सभी प्रकार के धनों में विद्या को श्रेष्ठ धन कहा गया है। जिसके पास विद्या है उसके पास सभी प्रकार का धन है। संसार में ज्ञान की पूजा होती है। यहाँ पूजा का अर्थ सम्मान और आदर से है। विद्या से संपन्न व्यक्ति अपने ही देश में नहीं विदेश में भी सम्मान पाता है। आज हजारों भारतीय विद्या के बल पर ही संपूर्ण विश्व में सम्मान के साथ रह रहे हैं और देश का मान बढ़ा रहे हैं।

हम सभी जानते हैं कि दुनिया के सारे व्यापार इस धरती पर होते हैं। जड़-चेतन, जीव-जंतु सभी का पालन पृथ्वी करती है। युधिष्ठिर ने धरती को बर्तन की तरह बताया। इस धरती में सब कुछ समाया हुआ है। नदी, पहाड़, रेगिस्तान तथा नाना प्रकार के व्यापार धरती पर ही होते हैं। इसलिए इसे सबसे बड़ा बर्तन कहा गया है।

यक्ष ने एक गंभीर सवाल यह पूछा कि इस संसार की सबसे आश्चर्यजनक बात क्या है तो उसका उत्तर देखने लायक है। संसार को मृत्युलोक कहा जाता है। यहाँ जो कुछ भी है, सब नाशवान है। यहाँ जो जन्म लेता है, उसकी मृत्यु भी निश्चित है। परिवार, समाज और देश में प्रतिदिन किसी-न-किसी के मरने की खबर आती है। हम सब यह अच्छी तरह जानते हैं कि मृत्यु अवश्यंभावी है फिर भी हम सभी मरना नहीं चाहते। खुद नहीं मरने की इच्छा करना सबसे बड़ा आश्चर्य है। जो चीज़ सत्य है, जिसका होना तय है, उससे मुँह मोड़ना बहुत बड़ा आश्चर्य है।

जीवन में हम सभी सुखी होना चाहते हैं, परंतु ऐसा संभव नहीं है। सुख और दुख जीवन के पहलू है। इस संसार में सुखी वह है जो किसी से ऋण नहीं लेता। अपने घर में परिवार के साथ संतुष्ट होकर रहता है। परिवार के भरण-पोषण के लिए घर नहीं छोड़ता वह सुखी और आनंदित है। सीमित संसाधनों में अपने परिवार के साथ संतोष से रहने वाला व्यक्ति ही सुखी है। आप इस अंश को आज के संदर्भ में देख सकते हैं। आज अधिकांश मनुष्य असंतुष्ट है। व्यक्ति ऋणी है और अपना घर-परिवार छोड़ने के लिए विवश है। इस दौर में यह संवाद अत्यंत प्रासंगिक है।

इस प्रकार यह अंश हमारे जीवन को आसान बनाने में मदद करता है। यहाँ माता, पिता, ईश्वर, धैर्य, विद्या, भूमि, सत्य तथा संतोष के महत्व को प्रतिपादित किया गया है। आज की परेशानी का कारण इन जीवन-मूल्यों से दूर होना है। सहज, सरल और परिपूर्ण जीवन के लिए इन मूल्यों को अपनाना आवश्यक है।

पाठगत प्रश्न 18.3

सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

1. यह संसार किसकी इच्छा से चलता है–

   (क) सूर्य (ख) प्रकृति

   (ग) ईश्वर (घ) व्यक्ति

2. ईश्वर की अनुपम कृति किसे कहा गया है–

   (क) सूर्य को (ख) चन्द्र को

   (ग) धरती को (घ) मनुष्य को

3. जीवन की कठिनाइयों का सामना किया जा सकता है–

   (क) धन से (ख) बल से

   (ग) धैर्य से (घ) सहयोग से

4. हवा से भी तेज क्या है–

   (क) प्रकाश (ख) मन

   (ग) आँधी (घ) अंधेरा

क्रियाकलाप 18.3

- घर में बुजुर्गों के प्रति विशेष आदर और स्नेह रखना हम सभी का दायित्व है। अपने साथियों से इसके कारणों के बारे में चर्चा कीजिए और इसके लिए नयी पीढ़ी को जो-जो चाहिए उन पाँच बिन्दुओं का उल्लेख कीजिए।

क्रम सं.	पाँच बिन्दुओं का उल्लेख

अंश-4

यक्ष के सभी प्रश्नों का अनुकूल और उचित उत्तर देकर युधिष्ठिर ने यक्ष को प्रसन्न कर दिया। प्रसन्न होकर यक्ष ने कहा कि, हे युधिष्ठिर। तुम धर्म के जानकार हो। मैं तुम्हारे सभी उत्तरों से अत्यंत प्रसन्न हूँ। इसलिए मैं तुम्हारे एक भाई को जीवन दान देता हूँ। बोलो तुम्हारे किस भाई को जीवित करूँ। युधिष्ठिर ने कहा कि आप नकुल को जीवित कर दीजिए। युधिष्ठिर के इस उत्तर को सुनकर यक्ष को आश्चर्य हुआ कि युधिष्ठिर अपने बलशाली भाई भीम और अर्जुन को छोड़कर नकुल को जीवित करना क्यों चाहता है? आज भी समाज में

हम लोगों को स्वार्थ के कारण न्याय से दूर जाते देखते हैं। जीवन और मृत्यु जैसे प्रश्नों पर युधिष्ठिर का यह न्याय समाज के लिए उदाहरण है। उन्होंने कहा कि धर्मात्मा महाराज पांडु की दो रानियाँ थीं–कुन्ती और माद्री। भीम, अर्जुन और मैं कुन्ती माता के पुत्र हैं और नकुल और सहदेव माता माद्री के पुत्र हैं। मैं माता कुन्ती का पुत्र जीवित हूँ, इसलिए मैं चाहता हूँ कि माता माद्री का भी एक पुत्र जीवित रहे। इसलिए आपसे नकुल का जीवन माँग रहा हूँ। आज समाज को न्याय की आवश्यकता है। हमारा समाज स्वार्थ में लिप्त है। स्वार्थी प्रवृत्ति के कारण चारों ओर भ्रष्टाचार, अन्याय का बोलबाला है। ऐसे समय में इन ऊँचे आदर्शों को अपनाकर समाज को नयी दिशा देने का काम किया जा सकता है।

आज समाज में स्वार्थ-भावना के कारण ही सभी समस्याएँ हैं। उदारता, करुणा तथा समता की भावना के महत्व को समझने की आवश्यकता है। युधिष्ठिर के उत्तर को सुनकर यक्ष प्रसन्न हुए। प्रसन्न होकर यक्ष ने युधिष्ठिर के चारों भाइयों को जीवित कर दिया। यक्ष ने अपने बारे में बताते हुए कहा कि मैं तुम्हारा पिता हूँ। मैं तुम्हारी परीक्षा ले रहा था। यहाँ अभिप्राय यह है कि यक्ष पिता होने के कारण अपने पुत्र की परीक्षा ले रहे थे। उन्हें आने वाले समय का आभास था। जीवन में आपके स्वजन हमेशा सुख-दुख में भले ही शामिल न हों लेकिन वे चिंतित अवश्य रहते हैं। वे आपके सामर्थ्य की जाँच करते हैं और उसे बढ़ाने में मदद भी करते हैं। जीवन में सफलता प्राप्त करने के लिए विभिन्न परीक्षाओं से गुजरना पड़ता है। धैर्य, विवेक और सत्य के मार्ग पर चलकर ही हम सफल होते हैं। इन्हीं मूल्यों को आत्मसात करने के कारण सभी पांडव जीवित हो सके। सभी पांडवों ने यक्ष रूपी धर्मराज को प्रणाम किया। यक्ष प्रसन्न हुए। उन्होंने पांडवों को वनवास के बाद सफलतापूर्वक अज्ञातवास पूरा करने का वरदान दिया और अंतर्ध्यान हो गए।

18.3 शिल्प-सौंदर्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आपने देखा होगा कि इसकी भाषा अन्य गद्य-रचनाओं से अलग है। यह संवाद की शैली है। संवाद लेखन एक महत्वपूर्ण अंग है। फिल्मों, टीवी धारावाहिक तथा नाटक आदि लेखन में संवाद-लेखकों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। संवाद-लेखन करने से पहले निम्नलिखित बिंदुओं पर विचार करना आवश्यक है :

- विषयवस्तु की समझ,
- पात्रों की सामाजिक एवं ऐतिहासिक पृष्ठभूमि,
- पात्रानुकूल भाषा,
- घटना, स्थिति, भाव तथा निर्देश को कोष्ठक में लिखना,
- रोचकता एवं सरसता,
- सरल, सहज एवं संक्षिप्ता।

18.4 आपने क्या सीखा

- यह पाठ महाभारत की कथाओं में से एक का अंश है जिसमें यह संदेश दिया गया है कि विपरीत परिस्थितियों का धैर्य के साथ सामना करना चाहिए।
- दार्शनिक प्रश्नों को जीवन की सापेक्षता में देखना चाहिए तथा जीवन के वास्तविक सत्य का बोध होना चाहिए।
- परमात्मा के स्वरूप को समझना आवश्यक है तभी जीवन के वास्तविक सुख की समझ हो सकेगी।
- सत्य, प्रेम, अहिंसा, सदाचार तथा शांति जैसे जीवन-मूल्यों का पालन आज की आवश्यकता है।
- माता-पिता तथा शिक्षा का महत्व समझना ज़रूरी है। साथ ही धर्म और न्याय के महत्व को समझना आवश्यक है।
- प्रश्नोत्तर और संवाद-शैली इसकी प्रमुख विशेषता है।

18.5 सीखने के प्रतिफल

- अपने परिवेशगत अनुभवों पर अपनी स्वतंत्र और स्पष्ट राय व्यक्त करते हैं।
- विविध साहित्यिक विधाओं के अंतर को समझते हुए उनके स्वरूप का विश्लेषण करते हैं।
- प्राकृतिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक मुद्दों, घटनाओं के प्रति अपनी प्रतिक्रिया को बोलकर/लिखकर व्यक्त करते हैं।
- सभी प्रकार की विविधताओं (धर्म, जाति, लिंग, क्षेत्र एवं भाषा-संबंधी) के प्रति सकारात्मक एवं विवेकपूर्ण समझ लिखकर, बोलकर एवं विचार-विमर्श के माध्यम से अभिव्यक्त करते हैं।
- विभिन्न विषयों के आपसी संबंधों की समझ लिखकर, बोलकर एवं विचार-विमर्श के द्वारा व्यक्त करते हैं।
- विभिन्न अवसरों पर वैज्ञानिक दृष्टिकोण को प्रदर्शित करते हैं; जैसे-विचार-विमर्श, वैचारिक लेखन, वाद-विवाद प्रतियोगिता आदि।
- भाषा-कौशलों के माध्यम से जीवन-कौशलों को आत्मसात करते हैं और अभिव्यक्त करते हैं।

18.6 योग्यता विस्तार

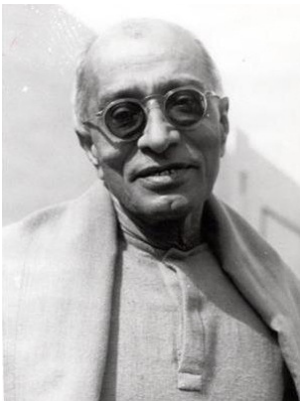

चित्र 18.2 :
चक्रवर्ती राजगोपालाचारी

चक्रवर्ती राजगोपालाचारी का जन्म मद्रास प्रेसीडेंसी के सालेम जिले के थोरापल्ली गाँव में 10 दिसंबर, 1878 को हुआ था। उनकी प्रारंभिक शिक्षा थोरापल्ली में ही हुई। बाद में उनका परिवार होसुर चला गया। उन्होंने मैट्रिकुलेशन की परीक्षा सन् 1891 में पास की और वर्ष 1894 में बैंगलोर के सेंट्रल कॉलेज से कला में स्नातक हुए। इसके बाद उन्होंने प्रेसीडेंसी कॉलेज, मद्रास में कानून की पढ़ाई के लिए दाखिला लिया और सन् 1897 में इसे पूरा किया।

चक्रवर्ती राजगोपालाचारी एक भारतीय स्वतंत्रता सेनानी, राजनेता, लेखक और वकील थे। वे भारत के अंतिम गवर्नर जनरल भी थे। अपने सार्वजनिक जीवन में उन्होंने विभिन्न महत्वपूर्ण पदों पर काम किया। भारतीय राष्ट्रीय काँग्रेस में एक महत्वपूर्ण नेता के साथ-साथ वे मद्रास प्रेसीडेंसी के प्रमुख, पश्चिम बंगाल के राज्यपाल, भारत के गृहमंत्री और मद्रास राज्य के मुख्यमंत्री भी रहे। 'राजाजी' के नाम से मशहूर चक्रवर्ती राजगोपालाचारी को देश सेवा के लिए किए गए कार्यों हेतु भारत के सर्वोच्च नागरिक सम्मान 'भारत-रत्न' से सम्मानित किया गया।

उनकी महत्वपूर्ण रचनाएँ हैं–

- 'चक्रवर्ती तिरुभगन' (गद्य में रामायण कथा) के लिए उन्हें 1958 में साहित्य अकादमी पुरस्कार (तमिल भाषा में लेखन के लिए) मिला।
- 'स्वराज' नामक पत्र में उनके लेख निरंतर प्रकाशित होते रहे।
- महाभारत।
- रामायण आदि।

18.7 पाठांत प्रश्न

1. पिता को आकाश से भी ऊँचा क्यों माना गया है? पाठ के आधार पर लिखिए।
2. बुद्धिमान व्यक्ति की पहचान किस प्रकार की जा सकती है?
3. मनुष्य अपने प्रत्येक जन्म में संसार से लगाव क्यों रखता है? कारण सहित उल्लेख कीजिए।
4. जीवन में सुख-शांति के लिए धन की आवश्यकता पर विचार व्यक्त कीजिए।
5. 'प्रेम का क्षेत्र विस्तृत है–' कैसे?
6. मनुष्य के जीवन में कामनाओं की भूमिका को स्पष्ट कीजिए।
7. युधिष्ठिर नकुल के स्थान पर अर्जुन को जीवित करने के लिए यक्ष से कहते तो क्या होता?

8. यक्ष ने युधिष्ठिर से वरदान माँगने के लिए क्यों कहा?

9. पाठ में निहित पाँच जीवन-मूल्यों को चुनकर उन पर विचार कीजिए।

10. आपकी दृष्टि में इस संवाद को पढ़ने से कौन-कौन से लाभ हैं? लगभग 80-100 शब्दों में लिखिए।

11. 'तनाव और अविश्वास के माहौल में यह संवाद जीवन के प्रति नया दृष्टिकोण देता है'– 80-100 शब्दों में अपने विचार व्यक्त कीजिए।

12. 'भारतीय दर्शन में जीवन-मूल्यों के महत्व को स्थापित किया गया है'–पाठ के आधार पर उदाहरण सहित कथन की समीक्षा कीजिए।

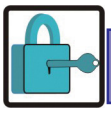

18.8 उत्तरमाला

बोध प्रश्न 18.1

1. (घ)
2. (ग)
3. (क)
4. (क)

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

18.1
1. (घ)
2. (क)
3. (क)
4. (क)

18.2
1. (क)
2. (ख)
3. (घ)

18.3
1. (ग)
2. (घ)
3. (ग)
4. (ख)